

बकरियों और भेड़ों में पी.पी.आर. (प्लेग) से बचाएं

डॉ. भूषण कुमार सिंह, डॉ. आर. पी. सिंह, डॉ. अभीक पात्र, डॉ. रातुल मोनी राम

एवं डॉ. आशुतोष कुमार

कृषि विज्ञान केंद्र नरकटियागंज, पश्चिम चम्पारण, बिहार

(आर.पी.सी.ए.यू., पूसा, समस्तीपुर, बिहार)

दस्त, निमोनिया और गंभीर संक्रमण से पशुओं की सुरक्षा के लिए आवश्यक सावधानियां

बकरी और भेड़ पालन ग्रामीण परिवारों के लिए आय और आजीविका का एक महत्वपूर्ण साधन है। विशेषकर छोटे और सीमांत किसानों के लिए बकरियां कम लागत में पालन की जा सकने वाली पशुधन संपदा हैं। इसलिए इनका स्वस्थ रहना पशुपालक की आर्थिक सुरक्षा से सीधे जुड़ा हुआ है। मौसम में अचानक बदलाव, ठंड, भीड़भाड़, खराब स्वच्छता, अपर्याप्त पोषण तथा संक्रमित पशुओं के संपर्क में आने से कई संक्रामक रोग तेजी से फैल सकते हैं। बकरियों और भेड़ों में ऐसा ही एक गंभीर और अत्यधिक संक्रामक रोग है **पी.पी.आर. (Peste des Petits Ruminants)**, जिसे सामान्य बोलचाल में **बकरियों का प्लेग** भी कहा जाता है। यह एक विषाणुजनित बीमारी है और इसके कारण पशुओं में तेज बुखार, मुंह में घाव, आंख एवं नाक से स्राव, खांसी, सांस लेने में कठिनाई, दस्त, निर्जलीकरण और निमोनिया जैसी गंभीर समस्याएं हो सकती हैं। समय पर पहचान और रोकथाम न होने पर यह बीमारी झुंड में तेजी से फैल सकती है और बड़ी संख्या में पशुओं को प्रभावित कर सकती है।

पी.पी.आर. क्या है?

पी.पी.आर. बकरियों और भेड़ों में होने वाला एक अत्यधिक संक्रामक विषाणुजनित रोग है। इसका प्रकोप विशेष रूप से बकरियों में गंभीर रूप ले सकता है। युवा पशु, विशेषकर लगभग 4 से 12 महीने की आयु के पशु, कई परिस्थितियों में संक्रमण के प्रति अधिक संवेदनशील हो सकते हैं।

रोग की गंभीरता पशु की प्रतिरोधक क्षमता, पोषण, आयु, संक्रमण की तीव्रता तथा अन्य सह-संक्रमणों पर निर्भर करती है। गंभीर मामलों में दस्त, निर्जलीकरण, निमोनिया और अन्य जटिलताओं के कारण पशु की मृत्यु भी हो सकती है।

इसी कारण पी.पी.आर. को बकरी एवं भेड़ पालन में आर्थिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रोग माना जाता है।

रोग का कारक

पी.पी.आर. **मोरबिलीवायरस (Morbillivirus)** समूह के एक विषाणु के कारण होने वाला संक्रामक रोग है। यह रोग मुख्य रूप से बकरियों और भेड़ों को प्रभावित करता है।

संक्रमण कैसे फैलता है?

पी.पी.आर. संक्रमित पशु के संपर्क में आने पर तेजी से फैल सकता है। संक्रमित पशु के नाक, मुंह और आंखों से निकलने वाले स्राव तथा मल जैसे संक्रमित पदार्थ रोग के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

संक्रमण के प्रमुख रास्तों में शामिल हैं:

- संक्रमित पशु के बहुत निकट संपर्क में आना।
- खांसने या छींकने के दौरान निकलने वाले संक्रमित स्राव के संपर्क में आना।
- संक्रमित पशु के नाक, मुंह या आंखों के स्राव से संपर्क।
- संक्रमित मल या अन्य उत्सर्जी पदार्थों के संपर्क में आना।
- दूषित चारा, पानी, बर्तन या उपकरणों के माध्यम से अप्रत्यक्ष संक्रमण।
- संक्रमित पशुओं को स्वस्थ झुंड में शामिल करना।

इसलिए किसी नए पशु को सीधे झुंड में मिलाने के बजाय उसकी स्वास्थ्य स्थिति की जांच और उचित अवधि तक अलग रखकर निगरानी करना बेहतर होता है।

पी.पी.आर. के प्रमुख लक्षण

पी.पी.आर. में लक्षण अचानक और तेजी से विकसित हो सकते हैं। रोग की ऊष्मायन अवधि सामान्यतः कुछ दिनों की होती है और इसके बाद पशु में बीमारी के स्पष्ट लक्षण दिखाई देने लगते हैं।

प्रमुख लक्षण इस प्रकार हो सकते हैं:

1. तेज बुखार

संक्रमित पशु में तेज बुखार आ सकता है। पशु सुस्त दिखाई देता है और सामान्य गतिविधियों में रुचि कम कर देता है।

2. भूख में कमी

पशु चारा-पानी कम कर देता है या खाना पूरी तरह छोड़ सकता है। इससे उसकी कमजोरी तेजी से बढ़ सकती है।

3. आंख और नाक से स्राव

शुरुआत में आंख और नाक से पानी जैसा स्राव निकल सकता है। बीमारी बढ़ने पर यह स्राव गाढ़ा और चिपचिपा हो सकता है।

आंखों की श्लेष्म झिल्ली में लालिमा तथा सूजन भी दिखाई दे सकती है।

4. मुंह में घाव और छाले

होठों, मसूड़ों, गालों की अंदरूनी सतह, जीभ तथा मुंह के अन्य हिस्सों में घाव या क्षतियां दिखाई दे सकती हैं। इन घावों के कारण पशु को चारा खाने में कठिनाई होती है।

जीभ पर सूजन या क्षतिग्रस्त ऊतक के क्षेत्र भी दिखाई दे सकते हैं।

5. सांस लेने में परेशानी

रोग के दौरान श्वसन तंत्र प्रभावित होने पर खांसी, छींक, तेज या कठिन सांस लेना तथा सांस लेते समय असामान्य आवाजें सुनाई दे सकती हैं।

कुछ मामलों में निमोनिया विकसित हो सकता है, जिससे पशु की स्थिति गंभीर हो जाती है।

6. दस्त

बीमारी के कुछ दिनों बाद तेज दस्त शुरू हो सकते हैं। दस्त लगातार होने पर शरीर से पानी और आवश्यक लवणों की कमी होने लगती है।

7. निर्जलीकरण और कमजोरी

दस्त तथा कम पानी पीने के कारण पशु तेजी से निर्जलित हो सकता है। आंखें धंसना, अत्यधिक कमजोरी और खड़े होने में परेशानी जैसे संकेत गंभीर स्थिति की ओर इशारा कर सकते हैं।

8. गर्भवती पशुओं में प्रजनन संबंधी समस्या

गंभीर संक्रमण या बीमारी के तनाव के कारण गर्भवती पशुओं में गर्भपात जैसी समस्या भी हो सकती है।

बीमारी में मृत्यु का मुख्य कारण क्या हो सकता है?

पी.पी.आर. में मृत्यु केवल एक लक्षण के कारण नहीं होती। गंभीर दस्त के कारण शरीर में पानी और इलेक्ट्रोलाइट की कमी, भोजन न लेने से कमजोरी, श्वसन संक्रमण और निमोनिया तथा द्वितीयक जीवाणु संक्रमण पशु की स्थिति को अत्यंत गंभीर बना सकते हैं।

इसलिए बीमारी की शुरुआती अवस्था में ही पशु की पहचान करना और उपचारात्मक सहायता शुरू करना महत्वपूर्ण है।

पी.पी.आर. का निदान

पी.पी.आर. की पहचान केवल लक्षणों के आधार पर पूरी तरह सुनिश्चित नहीं की जा सकती, क्योंकि कुछ अन्य संक्रामक रोगों में भी मिलते-जुलते लक्षण दिखाई दे सकते हैं।

पशु चिकित्सक बीमारी के इतिहास, नैदानिक लक्षणों, झुंड में बीमारी के फैलाव तथा आवश्यकता के अनुसार प्रयोगशाला जांच के आधार पर निदान करते हैं।

पुष्टि के लिए विभिन्न प्रयोगशाला परीक्षणों का उपयोग किया जा सकता है, जिनमें **ELISA, RT-PCR तथा अन्य उपयुक्त आणविक या प्रतिरक्षाविज्ञानी परीक्षण** शामिल हैं। आवश्यकता पड़ने पर संक्रमित पशु के नमूनों की जांच अधिकृत पशु रोग निदान प्रयोगशाला में कराई जा सकती है।

इसलिए गंभीर बीमारी के मामले में केवल अनुमान के आधार पर उपचार शुरू करने के बजाय पशु चिकित्सक से जांच कराना अधिक उचित है।

पी.पी.आर. का उपचार

पी.पी.आर. एक विषाणुजनित बीमारी है और इसके लिए सामान्य अर्थ में कोई ऐसी विशिष्ट दवा उपलब्ध नहीं है जो सीधे विषाणु को समाप्त कर दे। इसलिए उपचार मुख्यतः सहायक चिकित्सा और जटिलताओं को नियंत्रित करने पर केंद्रित होता है।

उपचार में पशु की स्थिति के अनुसार निम्न प्रकार की सहायता की आवश्यकता हो सकती है:

- शरीर में पानी और इलेक्ट्रोलाइट की कमी को पूरा करना।
- पर्याप्त और आसानी से पचने वाला पोषण उपलब्ध कराना।
- बुखार तथा अन्य लक्षणों के लिए पशु चिकित्सक द्वारा उचित दवाओं का उपयोग।
- निमोनिया या द्वितीयक जीवाणु संक्रमण होने पर चिकित्सकीय सलाह के अनुसार उचित उपचार।
- कमजोर और निर्जलित पशुओं की विशेष निगरानी।
- पशु को गर्म, सूखी और साफ जगह पर रखना।
- संक्रमित पशु को स्वस्थ पशुओं से अलग रखना।

महत्वपूर्ण: एंटीबायोटिक दवाएं विषाणु को सीधे समाप्त नहीं करतीं। उनका उपयोग केवल पशु चिकित्सक द्वारा द्वितीयक जीवाणु संक्रमण की संभावना या पुष्टि होने पर किया जा सकता है। इसी प्रकार किसी भी इंजेक्शन, सीरम, घरेलू नुस्खे या दवा की मात्रा का निर्णय बिना पशु चिकित्सक की सलाह के नहीं करना चाहिए।

गंभीर दस्त या निर्जलीकरण की स्थिति में तरल पदार्थों की चिकित्सा जीवनरक्षक हो सकती है, लेकिन किस प्रकार का तरल, कितनी मात्रा में और किस मार्ग से दिया जाए, इसका निर्णय पशु की स्थिति देखकर पशु चिकित्सक को करना चाहिए।

बचाव ही सबसे प्रभावी उपाय है

पी.पी.आर. जैसे अत्यधिक संक्रामक रोग में उपचार की तुलना में रोकथाम का महत्व कहीं अधिक है। एक बार बीमारी झुंड में फैलने के बाद उपचार और प्रबंधन दोनों कठिन हो सकते हैं। इसलिए पशुपालकों को नियमित रोग-निवारण कार्यक्रम अपनाना चाहिए।

1. समय पर टीकाकरण कराएं

पी.पी.आर. की रोकथाम के लिए टीकाकरण सबसे महत्वपूर्ण उपायों में से एक है। पशुओं की आयु, क्षेत्र में रोग की स्थिति तथा उपलब्ध वैक्सीन के आधिकारिक निर्देशों के अनुसार टीकाकरण कार्यक्रम निर्धारित किया जाना चाहिए।

पशुपालक अपने क्षेत्र के पशु चिकित्सक या पशुपालन विभाग से संपर्क करके यह सुनिश्चित करें कि उनके पशुओं को निर्धारित समय पर पी.पी.आर. का टीका लगाया गया है।

टीकाकरण का रिकॉर्ड सुरक्षित रखना भी जरूरी है, ताकि अगली खुराक या निर्धारित पुनः टीकाकरण का समय न छूटे।

2. बीमार पशु को तुरंत अलग करें

यदि किसी पशु में तेज बुखार, मुंह के घाव, आंख-नाक से स्राव, खांसी या दस्त जैसे लक्षण दिखाई दें तो उसे तुरंत स्वस्थ पशुओं से अलग कर दें।

बीमार पशु को अलग रखने से संक्रमण के प्रसार को कम करने में सहायता मिलती है।

3. नए पशुओं को सीधे झुंड में न मिलाएं

बाहर से खरीदे गए या दूसरे स्थान से लाए गए पशुओं को तुरंत पुराने झुंड के साथ नहीं रखना चाहिए। उनकी स्वास्थ्य स्थिति की जांच कराकर उचित अवधि तक अलग रखकर निगरानी करना सुरक्षित पशुपालन का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

4. फार्म की स्वच्छता बनाए रखें

बकरी शेड में नियमित सफाई करें। गीला और गंदा बिछावन तुरंत हटाएं। चारा और पानी के बर्तनों को साफ रखें तथा भीड़भाड़ से बचें।

अच्छी स्वच्छता पशुओं में अनेक संक्रमणों के जोखिम को कम करने में सहायता करती है।

5. पर्याप्त पोषण दें

संतुलित आहार पशुओं की सामान्य वृद्धि और प्रतिरक्षा क्षमता के लिए महत्वपूर्ण है। पशुओं को उनकी आयु, अवस्था और उत्पादन के अनुसार पर्याप्त ऊर्जा, प्रोटीन, खनिज एवं अन्य आवश्यक पोषक तत्व उपलब्ध कराने चाहिए।

कमजोर और कुपोषित पशु संक्रमण के प्रति अधिक संवेदनशील हो सकते हैं।

6. ठंड में विशेष देखभाल करें

सर्दियों में बकरियों और मेमनों को ठंडी हवा, बारिश और नमी से बचाएं। शेड में पर्याप्त वेंटिलेशन हो, लेकिन सीधे ठंडी हवा का तेज झोंका पशुओं पर न पड़े।

बिछावन सूखा रखें और विशेष रूप से छोटे मेमनों, गर्भवती पशुओं तथा कमजोर पशुओं की अतिरिक्त देखभाल करें।

7. बीमारी की सूचना समय पर दें

यदि एक से अधिक पशुओं में एक जैसे लक्षण दिखाई देने लगें, पशुओं की अचानक मृत्यु होने लगे या झुंड में बीमारी तेजी से फैलती दिखाई दे, तो इसे सामान्य बीमारी समझकर इंतजार न करें।

तुरंत निकटतम पशु चिकित्सालय, पशु चिकित्सक या संबंधित पशुपालन विभाग को सूचना दें।

पशुपालक के लिए एक सरल कार्ययोजना

पी.पी.आर. से बचाव के लिए पशुपालक निम्न सरल नियम अपना सकते हैं:

स्वस्थ पशु रखें → समय पर टीका लगवाएं → नए पशु को अलग रखें → बीमार पशु को तुरंत अलग करें → शेड साफ रखें → संतुलित आहार दें → बीमारी के लक्षण पर तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करें।

निष्कर्ष

पी.पी.आर. बकरियों और भेड़ों के लिए गंभीर और अत्यधिक संक्रामक रोग है। यह बीमारी केवल पशुओं के स्वास्थ्य को प्रभावित नहीं करती, बल्कि झुंड में तेजी से फैलने पर पशुपालक की आय और आजीविका को भी नुकसान पहुंचा सकती है।

तेज बुखार, भूख में कमी, मुंह में घाव, आंख और नाक से स्राव, खांसी, सांस लेने में परेशानी तथा दस्त जैसे लक्षण दिखाई देने पर पशुपालक को सतर्क हो जाना चाहिए। बीमारी की स्थिति में संक्रमित पशु को तुरंत अलग करना और पशु चिकित्सक से संपर्क करना आवश्यक है।

पी.पी.आर. के विरुद्ध सबसे मजबूत सुरक्षा समय पर टीकाकरण, अच्छी स्वच्छता, उचित पोषण, जैव-सुरक्षा और बीमारी की शीघ्र पहचान है।